

04 मई 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

E. संपादकीय:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध:

1. भारत के वैश्विक उत्थान का विरोधाभास, इसकी क्षेत्रीय गिरावट:

पर्यावरण:

1. यह एसडीजी लक्ष्यों को पटरी पर वापस लाने का वर्ष है:

F. प्रीलिम्स तथ्य:

1. भारतीय प्रेस स्वतंत्रता स्कोर में पिछले वर्ष की तुलना में गिरावट आई: आरएसएफ
2. मस्तिष्क मृत्यु के मामलों की कम पहचान से अंगदान प्रभावित:
3. चीन चंद्रमा के सुदूर हिस्से से नमूने प्राप्त करने के लिए एक जांच भेजा है:

G. महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

H. UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:**I. UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:****संपादकीय-द हिन्दू****संपादकीय:**

भारत के वैश्विक उत्थान का विरोधाभास, इसकी क्षेत्रीय गिरावट:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध:

विषय: विकसित और विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का भारत के हितों पर प्रभाव।

मुख्य परीक्षा: भारत की विदेश नीति।

प्रसंग:

- भारत की विदेश नीति एक विरोधाभास प्रस्तुत करती है जहां इसकी वैश्विक वृद्धि इसके क्षेत्रीय गिरावट के विपरीत है, खासकर दक्षिण एशिया में।
- जहां आर्थिक और सैन्य प्रगति के कारण भारत का वैश्विक कद बढ़ा है, वहीं चीन की तुलना में और क्षेत्रीय भू-राजनीति में बदलाव के कारण दक्षिण एशिया में इसका प्रभाव कम हुआ है।

वैश्विक उत्थान बनाम क्षेत्रीय गिरावट:

- G-20 और क्वाड (Quad) जैसे वैश्विक संस्थानों में भारत की बढ़ती शक्ति और भागीदारी इसकी बढ़ती वैश्विक प्रमुखता को रेखांकित करती है।
- हालाँकि, दक्षिण एशिया में भारत का प्रभाव कम हो गया है, इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव की तुलना में प्रधानता में कमी और सापेक्ष गिरावट आई है।

क्षेत्रीय गिरावट में योगदान देने वाले कारक:

- एक महाशक्ति के रूप में चीन का उदय दक्षिण एशिया में भारत के प्रभाव के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है।
- इस क्षेत्र से संयुक्त राज्य अमेरिका की वापसी और भारत-प्रशांत पर भारत के ध्यान ने क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को चीन के पक्ष में और अधिक स्थानांतरित कर दिया है।
- दक्षिण एशियाई छोटी शक्तियाँ अपने हितों के लिए चीन की उपस्थिति का लाभ उठाते हुए संतुलन, सौदेबाजी और बैडवागोनिंग जैसी रणनीतियाँ अपना रही हैं।

महत्व:

- भारत के वैश्विक उत्थान और क्षेत्रीय गिरावट के विरोधाभास का इसकी विदेश नीति और रणनीतिक उद्देश्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य में अपनी वैश्विक आकांक्षाओं और रणनीतिक प्रभाव को बनाए रखने के लिए भारत के लिए इस विरोधाभास को संबोधित करना महत्वपूर्ण है।

समाधान:**क्षेत्रीय सहभागिता का पुनर्मूल्यांकन करें:**

- भारत को दक्षिण एशिया की बदलती गतिशीलता को स्वीकार करना चाहिए और क्षेत्रीय जुड़ाव के लिए अपने पारंपरिक दृष्टिकोण का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए।
- क्षेत्र में चीन के उदय से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए सक्रिय और कल्पनाशील नीति दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

शक्तियों और अवसरों पर ध्यान दें:

- भारत को अपनी ताकत का लाभ उठाना चाहिए और अपने समुद्री क्षेत्र, विशेषकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अवसरों का पता लगाना चाहिए।
- भारत-प्रशांत रणनीतिक बातचीत में छोटे दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ जुड़ने से चीन के प्रभाव का मुकाबला करने और क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने में मदद मिल सकती है।

सॉफ्ट पावर और बाहरी साझेदारी का उपयोग करें:

- भारत को क्षेत्र में प्रभाव बनाए रखने, अनौपचारिक संपर्कों और संघर्ष प्रबंधन प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने के लिए अपनी सॉफ्ट पावर संपत्तियों का उपयोग करना चाहिए।

- हिंद महासागर और दक्षिण एशिया दोनों में बाहरी साझेदारी और सहयोग को अपनाने से भारत के क्षेत्रीय पतन से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है।

सारांश:

भारत के वैश्विक उत्थान और क्षेत्रीय गिरावट के बीच विरोधाभास इसकी विदेश नीति और रणनीतिक स्थिति के लिए जटिल चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। क्षेत्रीय सहभागिता रणनीतियों का पुनर्मूल्यांकन करके, शक्तियों का लाभ उठाकर और साझेदारियों को बढ़ावा देकर, भारत इस विरोधाभास से निपट सकता है और वैश्विक और क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर अपने प्रभाव का दावा कर सकता है।

यह एसडीजी लक्ष्यों को पटरी पर वापस लाने का वर्ष है:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

पर्यावरण:

विषय: संरक्षण और जैव विविधता।

मुख्य परीक्षा: एसडीजी की प्रगति।

प्रसंग:

- न्यूयॉर्क में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन ने 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाए गए एजेंडा 2030 में उल्लिखित 17 एसडीजी को प्राप्त करने की दिशा में प्रगति का आकलन किया।
- वैश्विक प्रतिबद्धताओं के बावजूद, एसडीजी की दिशा में प्रगति धीमी रही है, सीओवीआईडी-19 महामारी और अन्य संकटों के कारण, विशेष रूप से पर्यावरण और जैव विविधता से संबंधित लक्ष्यों में वृद्धि हुई है।

समस्याएँ:**धीमी प्रगति और पर्यावरण पर कम ध्यान:**

- एसडीजी की दिशा में प्रगति अपर्याप्त रही है, कोविड-19 महामारी और अन्य संकटों के कारण प्रगति रुक गई है।
- पर्यावरण और जैव विविधता से संबंधित लक्ष्यों, जैसे कि जलवायु कार्रवाई और जिम्मेदार उपभोग, पर अपर्याप्त ध्यान दिया गया है।
- एसडीजी को अलग-थलग करके आगे बढ़ाने से स्थिरता की एकीकृत प्रकृति कमजोर होती है, जिससे पर्यावरणीय क्षरण में तेजी आने का खतरा होता है।

तत्काल कार्रवाई के लिए प्रमुख क्षेत्र:

- संयुक्त राष्ट्र एसडीजी रिपोर्ट, 2023 निरंतर सरकारी प्रतिबद्धता, गरीबी उन्मूलन और असमानता को कम करने के लिए एकीकृत नीतियों और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षमताओं को मजबूत करने सहित तत्काल कार्रवाइयों की पहचान करती है।
- वैश्विक नेताओं ने 2030 तक एसडीजी वितरण में तेजी लाने की प्रतिबद्धता दोहराई है, लेकिन इन घोषणाओं को क्रियान्वित करना एक चुनौती बनी हुई है।

एसडीजी प्रभाव का आकलन:

- एसडीजी के राजनीतिक प्रभाव पर वैज्ञानिक साक्ष्य सीमित परिवर्तनकारी प्रभावों का सुझाव देते हैं, जो महत्वपूर्ण मानक या संस्थागत सुधारों की ओर ले जाने के बजाय मुख्य रूप से विवेकपूर्ण हैं।
- वैश्विक शासन में एसडीजी के एकीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा है, जिसका राष्ट्रीय और स्थानीय राजनीति पर सीमित प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है।

महत्व:

- एसडीजी की दिशा में धीमी प्रगति स्थिरता चुनौतियों का समाधान करने और एजेंडा 2030 की परिवर्तनकारी क्षमता को अधिकतम करने की तात्कालिकता को रेखांकित करती है।
- सतत विकास की दिशा में प्रगति में तेजी लाने के लिए व्यापार-बंद की पहचान करने और सह-लाभ को अधिकतम करने के लिए एक प्रणालीगत दृष्टिकोण लागू करना महत्वपूर्ण है।

समाधान:

प्रणालीगत दृष्टिकोण अपनाना:

- एसडीजी में सह-लाभ को अधिकतम करते हुए ट्रेड-ऑफ की पहचान और प्रबंधन के लिए एक प्रणालीगत दृष्टिकोण पर जोर दें।
- स्थानीय आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता वाले प्रवेश बिंदुओं को लागू करें।

चार प्रमुख क्षेत्रों का लाभ उठाना:

- सतत विकास की दिशा में कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए शासन, अर्थव्यवस्था और वित्त, व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यवाई और विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग लीवर के रूप में करें।
- स्थिरता के लिए एकीकृत मार्गों को डिजाइन और कार्यान्वित करने के लिए इन लीवरों से अभिनेताओं के बीच साझेदारी और सहयोग को बढ़ावा देना।

राजनीतिक कार्यवाई और नीति निर्माण:

- राजनेताओं और नीति निर्माताओं को राष्ट्रीय नीतियों में स्थिरता को प्राथमिकता देनी चाहिए और उन्हें एसडीजी के साथ जोड़ना चाहिए।
- 2024 में नवनिर्वाचित सरकारों को स्थिरता के मुद्दों पर विचार करना चाहिए और उन्हें अपने नीतिगत एजेंडे में एकीकृत करना चाहिए।

सारांश : वर्ष 2024 एसडीजी को आगे बढ़ाने की दिशा में वैश्विक कार्यवाई का अवसर प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से धीमी प्रगति और बढ़ती स्थिरता चुनौतियों के सामने। एक प्रणालीगत दृष्टिकोण अपनाने, प्रमुख क्षेत्रों का लाभ उठाकर और नीति निर्धारण में स्थिरता को प्राथमिकता देकर, देश एजेंडा 2030 में उल्लिखित परिवर्तनकारी लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रगति में तेजी ला सकते हैं।

प्रीलिम्स तथ्य:

1. भारतीय प्रेस स्वतंत्रता स्कोर में पिछले वर्ष की तुलना में गिरावट आई: आरएसएफ

प्रसंग: रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (आरएसएफ) ने अपना वार्षिक विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक जारी किया, जो विश्व स्तर पर प्रेस स्वतंत्रता में गिरावट का संकेत देता है।

- भारत के प्रेस स्वतंत्रता स्कोर में उल्लेखनीय कमी देखी गई, जो पिछले वर्ष की तुलना में 36.62 से गिरकर 31.28 हो गया।

वैश्विक प्रेस स्वतंत्रता में गिरावट:

- आरएसएफ ने दुनिया भर में प्रेस की स्वतंत्रता में औसतन 7.6 अंक की गिरावट दर्ज की।
- राजनीतिक प्राधिकारियों को विश्व स्तर पर प्रेस की स्वतंत्रता के लिए बड़े खतरों के रूप में पहचाना जाता है।

भारत की प्रेस स्वतंत्रता में गिरावट:

- भारत की रैंक में मामूली सुधार हुआ, फिर भी विभिन्न संकेतकों में गिरावट के कारण स्कोर गिर गया।
- आरएसएफ ने 2014 के बाद से भारत के मीडिया में 'अनौपचारिक आपातकाल की स्थिति' की चिंताजनक प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है।

प्रेस की स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले कारक:

- प्रेस स्वतंत्रता प्रश्नावली राजनीतिक, कानूनी, आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और सुरक्षा संदर्भों का मूल्यांकन करती है।
- सुरक्षा संकेतक को छोड़कर सभी पहलुओं में भारत का स्कोर गिरा।

पत्रकारों का उत्पीड़न:

- रिपोर्ट के अनुसार, सरकार की आलोचना करने वाले भारतीय पत्रकारों को उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जिससे असहमत आवाज़ों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

महत्व:

- लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बनाए रखने और शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए प्रेस की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है।
- प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध विविध दृष्टिकोणों तक जनता की पहुंच को कमजोर करते हैं और एक लोकतांत्रिक समाज के कामकाज में बाधा डालते हैं।

समाधान:

पत्रकारों के अधिकारों की रक्षा:

- उत्पीड़न और सेंसरशिप के खिलाफ पत्रकारों के लिए कानूनी सुरक्षा को मजबूत करना।

- पत्रकारों पर हमलों की निष्पक्ष जांच और जवाबदेही सुनिश्चित करें।

मीडिया बहुलवाद को बढ़ावा देना:

- एकाधिकार और पक्षपातपूर्ण प्रभाव को रोकने के लिए मीडिया स्वामित्व में विविधता और स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करें।
- एक जीवंत और विविध मीडिया परिदृश्य को बढ़ावा देने वाली पहलों का समर्थन करें।

पारदर्शिता बढ़ाना:

- दुष्प्रचार और दुष्प्रचार का मुकाबला करने के लिए सरकार-मीडिया संबंधों में पारदर्शिता को बढ़ावा देना।
- सूचना तक पहुंच को सुगम बनाना और अधिकारियों को जवाबदेह बनाने के लिए खोजी पत्रकारिता को प्रोत्साहित करना।

2. मस्तिष्क मृत्यु के मामलों की कम पहचान से अंगदान प्रभावित

प्रसंग: भारत में अंग दान की संभावना के बावजूद, मस्तिष्क मृत्यु के मामलों की खराब पहचान और प्रमाणीकरण के कारण अंग दान की दर कम हो गई है।

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने अंग दान की लगातार कम दर पर चिंता व्यक्त की है, संभावित दाताओं की बेहतर पहचान और परिवारों के बीच जागरूकता का आग्रह किया है।

समस्याएँ:

मस्तिष्क मृत्यु के मामलों की खराब पहचान:

- संभावित मामलों की उपलब्धता के बावजूद, मस्तिष्क मृत्यु के मामलों की प्रभावी पहचान और प्रमाणीकरण की कमी है।
- इससे संभावित अंग दाताओं की समय पर पहचान में बाधा आती है और दान की दर कम हो जाती है।

जागरूकता और सहमति का अभाव:

- संभावित दाताओं के परिवार अक्सर अंग दान के अवसर से अनजान होते हैं या उन्होंने सहमति नहीं दी होती है।
- अंग दान के बारे में खराब संचार और जागरूकता इस समस्या को और बढ़ा देती है।

प्रत्यारोपण कानूनों का अनुपालन:

- अंग दान की सुविधा के लिए मानव अंगों और ऊतकों के प्रत्यारोपण अधिनियम, 1994 (थोटा अधिनियम) का अनुपालन आवश्यक है।
- एसओपी और प्रमाणन प्रक्रियाओं का अपर्याप्त पालन अंग दान प्रोटोकॉल के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालता है।

महत्व:

- अंग दान जीवन बचाने और प्रत्यारोपण की आवश्यकता वाले व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है।
- अंग दान में आने वाली बाधाओं, जैसे मस्तिष्क मृत्यु के मामलों की कम पहचान, को संबोधित करना दान दरों को बढ़ाने और अंग प्रत्यारोपण के लिए प्रतीक्षा सूची को कम करने के लिए आवश्यक है।

समाधान:**बेहतर पहचान और प्रमाणन प्रक्रियाएँ:**

- अस्पतालों को मस्तिष्क मृत्यु के मामलों की तुरंत पहचान करने और प्रमाणित करने के लिए मानकीकृत प्रक्रियाएं लागू करनी चाहिए।
- संभावित दाताओं को पहचानने और स्थापित प्रोटोकॉल का पालन करने के लिए स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों को प्रशिक्षित करना महत्वपूर्ण है।

बढ़ी हुई जागरूकता और सहमति:

- जनता को अंग दान के महत्व के बारे में शिक्षित करने और गलत धारणाओं को दूर करने के लिए जन जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।
- अस्पतालों को संभावित दाताओं के परिवारों के साथ संवेदनशीलता से जुड़ना चाहिए, अंग दान के संबंध में सूचित निर्णय लेने की सुविधा के लिए जानकारी और सहायता प्रदान करनी चाहिए।

अनुपालन और निगरानी:

- अंग दान नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए थोटा अधिनियम और एसओपी का कड़ाई से पालन आवश्यक है।
- अस्पतालों में अंग दान प्रथाओं की नियमित निगरानी और मूल्यांकन से कमियाँ और सुधार के क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है।

3. चीन चंद्रमा के सुदूर हिस्से से नमूने प्राप्त करने के लिए एक जांच भेजा है

प्रसंग: चीन ने हाल ही में चंद्रमा के सुदूर हिस्से पर उतरने और नमूने लेकर लौटने के उद्देश्य से एक चंद्र जांच शुरू की है।

- यह मिशन चीन के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अन्वेषण कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ तेजी से प्रतिस्पर्धा कर रहा है।

समस्याएँ:**चंद्रमा के सुदूर भाग की खोज:**

- चंद्रमा का दूर वाला भाग निकट वाले भाग की तुलना में अपेक्षाकृत अज्ञात रहता है।

- इस मिशन की अंतर्दृष्टि दोनों क्षेत्रों के बीच अंतर पर प्रकाश डाल सकती है और चंद्र भूविज्ञान और विकास के बारे में हमारी समझ को बढ़ा सकती है।

अंतरिक्ष अन्वेषण में प्रतिस्पर्धा:

- चीन का अंतरिक्ष अन्वेषण कार्यक्रम तेजी से आगे बढ़ रहा है, जो पारंपरिक रूप से अंतरिक्ष अन्वेषण में अग्रणी संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रतिस्पर्धा पैदा कर रहा है।
- चंद्र जांच का प्रक्षेपण और एक चालक दल वाले अंतरिक्ष स्टेशन की स्थापना अंतरिक्ष में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने के लिए चीन की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है।

तकनीकी चुनौतियाँ:

- पृथ्वी के साथ सीधी दृष्टि-रेखा संचार की कमी के कारण चंद्रमा के दूर वाले हिस्से से संचार तकनीकी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।
- चंद्र जांच के साथ संचार बनाए रखने के लिए एक रिले उपग्रह की आवश्यकता होती है, जिससे मिशन में जटिलता बढ़ जाती है।

महत्व:

- चंद्रमा के सुदूर भाग का अन्वेषण रेडियो खगोल विज्ञान और भूवैज्ञानिक अध्ययन सहित अद्वितीय वैज्ञानिक अवसर प्रदान करता है।
- चीन के अंतरिक्ष अन्वेषण प्रयास वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी क्षमताओं को आगे बढ़ाने में योगदान करते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. 2019 में, चीन चंद्रमा के सुदूर हिस्से पर लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया।
2. चीन का चांग'ई 4 अंतरिक्ष यान दक्षिणी ध्रुव एंटेकेन बेसिन में स्थित वॉन कर्मन क्रेटर पर उतरा।

उपर्युक्त में से कौन सा कथन गलत है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर: d

व्याख्या : दोनों कथन सही हैं।

प्रश्न 2. राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (**NOTTO**) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत स्थापित एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन है।
2. यह अंग और ऊतक, खरीद और वितरण के लिए भारत में शीर्ष निकाय है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर: c

व्याख्या : दोनों कथन सही हैं।

प्रश्न 3. भारतीय प्रेस परिषद एक है:

- (a) सांविधिक निकाय
- (b) संवैधानिक निकाय
- (c) अर्ध-न्यायिक निकाय
- (d) दोनों (a) और (c)

उत्तर: a

व्याख्या : भारतीय प्रेस परिषद प्रेस परिषद अधिनियम, 1978 के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है। यह प्रेस की स्वतंत्रता और पत्रकारिता के नैतिक मानकों की सुरक्षा और प्रचार के लिए एक प्रहरी के रूप में कार्य करती है।

प्रश्न 4. 'विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक (**WPFI**)' किसके द्वारा प्रकाशित किया जाता है:

- (a) रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति
- (b) रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स
- (c) पत्रकारों का अंतर्राष्ट्रीय संघ

(d) संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद

उत्तर: b

व्याख्या : विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक (WPFI) 2002 से रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF) द्वारा देशों की प्रेस स्वतंत्रता रिकॉर्ड के संगठन के स्वयं के मूल्यांकन के आधार पर संकलित और प्रकाशित देशों की एक वार्षिक रैंकिंग है।

प्रश्न 5. एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (UNESCAP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह संयुक्त राष्ट्र के पाँच क्षेत्रीय आयोगों में से एक है।
2. इसका मुख्यालय बैंकॉक, थाईलैंड में है।
3. इसकी स्थापना 1970 में हुई थी।

उपर्युक्त में से कितने कथन गलत हैं/हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: a

व्याख्या: इसकी स्थापना 1947 में हुई थी।

UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. सतत विकास लक्ष्य - 2030 प्राप्त करने की दिशा में भारत द्वारा की गई प्रगति का आकलन करें। (250 शब्द, 15 अंक) (सामान्य अध्ययन - III, पर्यावरण)([Assess the progress made by India towards achieving the Sustainable Development Goals - 2030. \(250 words, 15 marks\) \(General Studies - III, Environment\)](#))

प्रश्न 2. भारत के वैश्विक कदम में वृद्धि के साथ-साथ इसकी क्षेत्रीय स्थिति में भी गिरावट आई है। क्या आप सहमत हैं? चर्चा करें। (250 शब्द, 15 अंक) (सामान्य अध्ययन - II, अंतर्राष्ट्रीय संबंध)([Rise in India's global stature has been accompanied with a decline in its regional standing. Do you agree? Discuss. \(250 words, 15 marks\) \(General Studies - II, International relations\)](#))

(नोट: मुख्य परीक्षा के अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों पर क्लिक कर के आप अपने उत्तर **BYJU'S** की वेब साइट पर अपलोड कर सकते हैं।)

